Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(1), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

हिन्दुस्तानी संगीत में राग&रागिनी पद्धति का रूप विधान

डॉ. दीपिका लोगानी त्रिखा
सह प्राध्यापक -संगीत वादन
पं. जे.अल.अन.गॉवर्नमेंट कॉलेज फरीदाबाद

भूमिका - ऐतिहासिकता की दृष्टि से राग रागिनी वर्गीकरण बहुत अधिक प्राचीन या नवीन नहीं है। प्राचीन एवं मध्यकालीन संगीत में राग रागिनी पद्धति का विशेष रूप से उल्लेख प्राप्त होता है। संगीत रत्नाकर के पश्चात ग्राम राग और देशी राग के स्थान पर राग -रागिनी और मेल पद्धति के नाम से दो अन्य वर्गीकरण पद्धतियाँ अस्तित्व में आई एक की दृष्टि ने रागों के भावरूप को लक्ष्य करके उनमें पुरुषत्व - स्त्रीत्व का दर्शन कर यौवनत्व और प्रौढ़त्व का अनुभव किया , यहाँ तक की नपुंसक रागों की भावुक कल्पना तक की गई । दूसरे की दृष्टि राग के स्वर रूप पर केंद्रित रही । पहली धारा राग -रागिनी वर्गीकरण के रूप में विकसित हुई और दूसरी धारा ने मेल पद्धति का रूप धरण कर लिया । राग रागिनी पद्धति का मध्य काल में इतना प्रचार हुआ की 14 वी शताब्दी के अंत तक दक्षिण भारत को छोड़ कर, समस्त उत्तरी भारत में यह पद्धति प्रचिलित थी ।[1]

राग रागिनी पद्धति का प्रादुर्भाव एवं एतिहासिकता - यूं तो इस वर्गीकरण प्रणाली को प्रस्तुत करने वाले अनेक विद्वान हैं - नारद संगीत मकरन्द के लेखक, सुधा कलश पुण्डरीक विट्ठल दामोदर श्री कण्ठ आदि । इन सबने अपनी-अपनी कृतियों में इस वर्गीकरण का उल्लेख किया है। किन्तु इस प्रणाली के बीज हमें मतंग कृत बृहद्देशी में भी कुछ अंशों में उपलब्ध होते हैं ।

मतंग ने अपने ग्रन्थ में रागों का वर्गीकरण 2 वर्गों में किया है -

ग्रामराग तथा देशी राग जिसको इन्होंने 7 गीतियों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया है यथा - शुद्धा भिन्ना गौड़ी राग साधारणी भाषा एवं विभाषा इनमें से प्रथम पाँच गीतियों में मतंग ने अपने 30 ग्राम रागों को रखा और शेष दो में कुछ रागों के भाषा-विभाषा आदि प्रकारों को रखा। यहाँ यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि मतंग के 30 ग्राम रागों के नाम पुल्लिंगवाची हैं और उनकी भाषा-विभाषा के नाम स्त्रीलिंग वाची हैं। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि रागों में पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व के भाव दर्शन की विचारधारा बृहददेशी में ही सर्वप्रथम उपलब्ध होती है।[2]

इस बात की पुष्टि 14वीं शताब्दी में सुधाकलश द्वारा रचित संगीतोपनिषदसारोधार से होती है। इस ग्रन्थ में मुख्य छः रागों में से प्रत्येक राग से सम्बन्धित 6 रागों को रागिनी न कहकर भाषा कहा गया है। आज तक प्राप्त ग्रंथों में यही सबसे पहला ग्रंथ है जिसमें स्त्री रागों को रागिनी न कहकर भाषा कहा गया है। अतः अपने ग्रंथ में सुधाकलश मतंग की विचारधारा का ही अनुपालन करते नज़र आते हैं ।इस 'भाषा' का मतंग की 'भाषा' के साथ सहज संबंध माना जा सकता है ।[3] जो कि इस बात का सूचक है कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व की कल्पना सूक्ष्म रूप में सही ग्राम राग, भाषा- विभाषा की वर्गीकरण पद्धति में रही होगी । उपरोक्त तथ्य से यह सपष्ट होता है कि मतंग कृत भाषा-विभाषा के रागों में स्त्रीत्व के बीज विद्यमान थे जोकि परवर्ती काल में राग- रागिनी वर्गीकरण के रूप में प्रसिद्ध हुआ ।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(1), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

मतंग के परवर्ती विद्वान प० शारंगदेव ने अपने ग्रन्थ संगीत रत्नाकर में राग वर्गीकरण का आधार मतंग कृत बृहददेशी को ही माना है अतः भाषा-विभाषा में स्त्रीत्व का दर्शन जो बृहददेशी में प्राप्त होता है उसी परम्परा का अनुमोदन संगीत रत्नाकर में किया गया है।[4]

संगीत मकरन्द के अन्तर्गत रागों के वर्गीकरण में 6 प्रमुख राग तथा उनकी भार्याओं के अतिरिक्त पुल्लिंग राग स्त्रीलिंग राग तथा नपुसंक राग जैसे भेद भी नारद ने दिए हैं। 'पण्डित शरतचन्द्र परांजपे' अपनी पुस्तक "संगीत बोध" में इसी तथ्य की पुष्टि करते हुए कहते हैं कि रागों के इस पारिवारिक वर्गीकरण का सूत्रपात नारद के मध्ययुगीन ग्रन्थ संगीत मकरन्द से माना जा सकता है। इसमें रागों का वर्गीकरण पुरुष स्त्री तथा नपुंसक रागों में किया गया है।[5] संगीत मकरन्द में रागों को लिंग के आधार पर वर्गीकृत करने के साथ ही उनके रसानुकूल प्रयोग का सिद्धान्त भी नारद ने बताया है-

रौद्रोदभुते तथा वीर पुंरागैः परिगीयते

श्रृंगार हास्य करुणं स्त्रीरागैश्च प्रगीयते

भयानके च वीभत्से शान्ते गायक पुस्तके [6]

अर्थात रौद्र अदभुत व वीर रस के प्रसंग में पुरुष राग श्रृंगार रस हास्य एवं करुण रस के लिए स्त्री राग तथा भयानक, विभत्स तथा शान्त रस के लिए नपुंसक रागों का प्रयोग करना चाहिए ।

मध्य युग के कुछ अन्य ग्रंथों में भी राग&रागिनी पद्धति का विशेष विवरण प्राप्त होता है। ये सभी ग्रन्थ 15 वीं से 17वीं शताब्दी के मध्य प्राप्त होते है। इन सभी मध्यकालीन ग्रंथकारों ने राग&रागिनी पद्धति के अन्तर्गत अपने मुख्य 6 राग माने हैं(जिनके नामों में भिन्नता मिलती है। प्रत्येक राग की पाँच &पाँच अथवा छः&छः रागनियाँ आठ आठ पुत्र व आठ आठ पुत्रवधु भी मानी हैं। इस प्रकार से रागों के परिवार की कल्पना की गई है।

इस पद्धति के समर्थकों के मुख्य चार मत पाए जाते हैंaaA

1 सोमेश्वर मत या शिव मत

2 भरत मत

3 हनुमान मत

4 कृष्ण मत या कल्लीनाथ मत[7]

1. **शिव मत या सोमेश्वर मत** - इस मतानुसार श्री, बसंत, पंचम, भैरव, मेघ, तथा नट नारायण मुख्य छः राग माने जाते थे। प्रत्येक राग की छः-छः रागिनियाँ आठ पुत्र व आठ पुत्रवधूएँ भी मानी जाती हैं ।[8]

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(1), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

राग	रागिनियाँ
श्री	मालवी, त्रिवेणी, गौरी, केदारी, मधुमाध्वी, पहाडिका
बसंत	देशी, देवगिरी, वरारी, तोड़ी, ललिता, हिन्दोली
पंचम	विभाषा, भूपाली, कर्णाटी, बड़हंसिका, मालवी, परमंज
भैरव	भैरवी, गुर्जरी, रागक्री, गुणक्री, बंगाली, सैंध्वी
मेघ	मल्लारी, सौरठी, सावेरी, कौशिकी, गांधरी, हरश्रृंगार

वृहन्नाट- कामोदी, आभीरी, नाटिका, कल्याणी, सारंगी

नट्टनारायण नट्ट&हम्बीरा। [9]

2 **भरत मत** - भरत मत के मानने वाले भैरव मालकंश हिडोल दीपक मेघ और श्री यह मुख्य 6 राग मानते थे और प्रत्येक राग से 5 रागिनियाँ 8 पुत्र और 8 पुत्रवधुएँ मानते थे।

राग	रागिनियाँ
भैरव	मधुमाध्वी, ललिता, वरारी, भैरवी, बहुली
मालकंश	गुर्जरी, विघावली, तोड़ी, खम्बावती, कुकुभ
हिंडोल	रामकली, मालवी, आसावरी, देवरी, कैकी
दीपक	केदारी, गौरा, रुद्रावती, कामोद, गुर्जरी
श्री	सैंध्वी, काकी, ठुकरी, विविध, सोहनी
मेघ	मल्लारी, सारंग, देशी, रतिषल्लिमा, कानरा ।[10]

3 **कृष्ण मत अथवा कल्लिनाथ मत** - कल्लिनाथ मत भी वही 6 राग मानते हैं जो शिव मत में माने गए हैं। प्रत्येक राग से 6 रागिनियाँ 8 पुत्र राग व 8 पुत्र वधुएँ माने हैं परन्तु इनकी रागिनियाँ शिव मत से भिन्न हैं ।

राग	रागिनियाँ
श्री	गौरी, कोलाहल, ध्वल, वरोराजी, मालकौंस, देवगंधर
बसन्त	अघाली, गुणकली, पटमंजरी, गौड़गिरि, धश्री, देवसांग
भैरव	भैरवी, गुर्जरी, बिलावली, विहाग, कंनरि, कानड़ा
पंचम	त्रिवेणी, हस्तंतरैवघ, अहोरी, कौकभ, बैरारी, आसावरी

नट्नारायण त्रिवंकी, तिलगी, पूर्वी, गांधरी, रामा, सिंधु, मल्लारी

मेघ बंगाली, मधुरा, कामोद, धनाश्री, देवर्तीथा, दिवाली ।[11]

4 **हनुमान मत** हनुमान मत को मानने वाले वही 6 राग मानते हैं जो भरत मत में माने गए हैं। प्रत्येक की 5 रागिनियाँ व उनसे उत्पन्न 8 पुत्र राग 8 पुत्रवधुएँ मानी हैं किन्तु इनकी रागिनियाँ भरत मत से भिन्न हैं ।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(1), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

राग	रागिनियाँ
भैरव	बंगाली, मधुमाध्वी, वराड़ी, भैरवी, सिंधु
कौशिक	तोड़ी, खम्बावती, गौरी, कुकुभ, गुणक्री
हिण्डोल	बेलावली, देशाख्य, रामकिरी, ललिता, पटमंजरी
दीपक	केदार, कागड़ा, देशी, कामोद, विहागड़ा
श्री	बसन्त, मालव, मालसिरा, धनाश्री, आसवरी
मेघ	मल्लारी, देशिका, भूपाली, टंक, दक्षिणगुर्जरी । [12]

"संगीत दर्पण" के लेखक 'पंडित दामोदर' ने तीन मतो से राग&रागिनी वर्गीकरण प्रस्तुत किया है-
1 **शिव मत**- इस मतानुसार छह राग तथा प्रत्येक की पाँच रागिनियों का वर्णन है।
2 **हनुमान मत**- इस मतानुसार छः राग प्रत्येक की पाँच रागिनियाँ तथा कुल मिलाकर छ: राग छत्तीस रागिनियाँ कही गई हैं
3 **रागार्णव मत** -इस मत के अनुसार भी छः राग प्रत्येक की पाँच रागिनियों को वर्णन मिलता है।

उपर्युक्त तीनों मतों में भिन्न भिन्न रागनियों का प्रयोग हुआ है। इस वर्गीकरण का शास्त्रीय आधार क्या रहा इस पर कोई चर्चा पण्डित दामोदर ने नहीं की है।
15वीं शताब्दी के भट्ट शुभन्कर ने संगीत दामोदर के अनुसार एक मत से 6 राग तथा 30 रागनिया तथा दूसरे मत से 6 राग 36 रागनियाँ बताई है।
पुण्डरीक विठ्ठल ने राग-माला नामक ग्रन्थ में 6 राग प्रत्येक की 5 स्त्रियाँ एवं 5 पुत्र कहे हैं। इनके मुख्य 6 रागों के नाम इस प्रकार हैं –
शुद्ध भैरव हिन्दोलो देशिकारस्ततः परम
श्री राग शुद्धनाट्यशच नर नारायणश्चज ।[13]
इसी प्रकार कुछ अन्य ग्रन्थकार जैसे 'फकीरुल्ला' ने "राग दर्पण" में ,' अबुल फज़ल' ने "आईने अकबरी" में राग- रागिनी वर्गीकरण को स्वीकार किया है। 'पण्डित भावभट्ट' ने भी "अनुप संगीतांकुश" में इसी वर्गीकरण का आधार लिया है। 'श्रीकण्ठ' ने रस-कौमुदी में मेल एवं राग रागिनी का समन्वय करने की कोशिश की है । फलस्वरूप मेलों के अन्तर्गत 25 पुरुष राग 15 स्त्री रागिनी का वर्णन किया है।[14] यद्यपि इन सबके मूल रागों उनकी रागिनियों तथा उनके परिवार के सम्बन्ध में मतभेद पाए जाते हैं। लेकिन सबसे अधिक समर्थन मूल छः राग उनकी 5-5 या 6-6 रागिनियों वाले मत को प्राप्त हुआ ।

यहाँ यह तथ्य विचारणीय है की सभी ग्रंथकारों ने अपनी कल्पना व इच्छानुसार किसी भी राग को राग, रागिनी, या पुत्र राग मान लिया, जिसमें कोई भी एकरूपता नज़र नहीं आती साथ ही रागों की संख्या केवल छ: और उनकी भार्याओं की संख्या तीस या छत्तीस ही क्यूँ मानी गई, इसका भी कोई आधार प्राप्त नहीं होता । सभी आधुनिक समीक्षकों ने मुख्य चार मतों का उल्लेख किया है और इन मतो के अनुसार उनके मूल छः राग रागनियों पुत्र और पुत्रवधुओं की सूचियाँ भी प्रस्तुत की हैं । लेकिन इन में से किसी ने भी इस बात का उल्लेख नहीं किया है कि चार मतो के मूल प्रवर्तक कौन है और उनका समय कौन सा है । एक बात और यह भी है कि सभी प्राचीन ग्रन्थों में इन चार मतों का एक साथ उल्लेख नहीं मिलता संगीतदर्पण" में राग रागिनी वर्गीकरण के समर्थक तीनमतों का उल्लेख है शिव मत, हनुमान मत, रागार्णव मत । शिव मत या हनुमान मत का उदय कब हुआ। इस विषय में पण्डित दामोदर मौन है। यह बात अवश्य है कि हनुमान मत के प्रचार की दृष्टि में कुछ अधिक समर्थन मिला। सिक्ख मत के आधार ग्रंथ

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(1), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

गुरु ग्रंथ साहिब के अन्त में राग माला शीर्षक के एक पद में जिन छः राग उनकी रागनियों पुत्र पुत्रवधुओं का उल्लेख मिलता है वह पूर्णरूपेण हनुमान मत के समान हैं ।

शैव मत के कुछ विचारकों ने छ: रागों की कल्पना के साथ मुख्य पाँच राग [भैरव, हिंडोल, श्री, मेघ तथा दीपक] शंकर के मुख से और छठा राग [मालकोंस] पार्वती के मुख से उद्भूत होने की पौराणिक उक्ति को राग रागिनी के उद्भव में संशिलष्ट किया है। कुछ अन्य लोग मूल छः रागों का सम्बन्ध छ: ऋतुओं से जोड़ते हैं। संगीत दर्पण में मुख्य छः राग व उनकी रागानियों को विभिन्न ऋतुओं में गाने का विधान इस प्रकार दिया गया है श्री शिशर ऋतु, बसन्त बसन्त ऋतु, भैरव ग्रीष्म ऋतु पंचम शरद ऋतु, मेघ वर्षा ऋतु।[15]

निष्कर्ष

तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि राग रागिनी वर्गीकरण का प्रचार और प्रसार रत्नाकरोत्तर काल में हुआ लेकिन इसका आरम्भ इससे काफी पहले हो चुका था। शिव और कृष्ण की पौराणिक गाथाओं से मूल रागो को जोड़ने की प्रकृति मध्य युग की नहीं हो सकती। इस वर्गीकरण प्रणाली पर जो जन श्रद्धा उत्पन्न हुई उसे भी आकस्मिक कारण नहीं कहा जा सकता। जैसे जैसे संगीत का संबंध लौकिक जीवन से घनिष्ठ होता चला गया तदानुसार राग रागनियों के रूप विधान भी परिवर्तित होते चले गए। मूल रागों की संख्या में मतभेद होता चला गया । इसके अतिरिक्त राग निर्माण में निरन्तर आने वाले वैविध्य ने इन सीमित सिद्धान्तों में आबद्ध वर्गीकरण पद्धति को सर्वथा अव्यवहारिक बना दिया । परिवार की अपनी सीमाएँ होती है, जब पुत्र और पौत्र की सम्बन्ध सूचक सीमा आ जाती है तब परिवार का क्षेत्र एक से अनेक होने के लिए विवश हो जाता है। कई परिवार बनते है और परिवारों के समूह कबीले जाति और राष्ट्र का रूप धारण करते हैं। लेकिन राग- रागिनी वर्गीकरण की परिवार सूचक धारणा इस विस्तारोन्मुख प्रवृत्ति के अनुरूप नहीं थी पुत्र और पुत्रवधुओं के बाद उनके विस्तार की गुंजाइश नहीं थी। फलस्वरूप इस वर्गीकरण पद्धति के अन्तर्गत नवोद्भव रागों का समावेश नितान्त असम्भव सा हो गया एक बात और यह भी है कि इस पारिवारिक वर्गीकरण में कोई वैज्ञानिक तर्क संगत और सर्वमान्य सिद्धान्त कार्यरत नहीं रहा । रागों की स्त्रियों उनके पुत्र और पुत्रवधुओं का चयन प्रत्येक शास्त्रकार ने मनमाने ढंग से किया। परिणाम यह हुआ कि यह पद्धति अव्यवस्थित और अवैज्ञानिक सी प्रतीत होने लगी। इसीलिए इस वर्गीकरण के साथ-साथ पनपने वाली मेल राग वर्गीकरण के प्रति विद्वानों का अधिक से अधिक झुकाव होने लगा । 19 शताब्दी तक आते आते यह प्रणाली ग्रंथों पुरानी बन्दिशों तथा लोकोक्तियो तक ही सीमित रह गई। कुछ भी हो यह अपने प्रचार काल में राग वर्गीकरण की अत्यंत श्रद्धेय पध्दति रही । इसमें कोई संदेह नहीं ।

पाद टिप्पणियाँ

1. ओंकारनाथ ठाकुर, संगीतांजलि, भाग 7,पृष्ठ 98
2. सुनन्दा पाठक, हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास, 1989, पृ. 240
3. ओंकारनाथ ठाकुर, संगीतांजली, भाग-6, पृ. 102
4. वही, पृ.102
5. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे 'संगीत बोध', पृ. 64
6. नारद, संगीतमकरंद, श्लोक 63, पृ. 19
7. विक्रमादित्य सिंह निगम 'संगीत कौमुदी' भाग-2, दि. अध्याय, पृ. 64
8. वही 65
9. कई ग्रन्थों में वृहन्नाट को 'नट्टनारायण' के नाम से लिखा गया है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(1), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

10. भातखण्डे, भातखण्डे संगीत शास्त्र, भाग-6, पृ. 88-89/
11. भातखण्डे, भातखण्डे संगीत शास्त्र, भाग-2, पृ. 163-64
12. 'समयाय अशकत' ग्रन्थ के अनुसार, भातखण्डे संगीत शास्त्र, भाग-3, पृ. 134
13. स्वतंत्र शर्मा, पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति, पृष्ठ 92
14. भातखण्डे, संगीत पद्धितयो का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 71
15. . विक्रमादित्य सिंह निगम 'संगीत कौमुदी' भाग-2, दि. अध्याय, पृ. 66

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.भातखंडे संगीत शास्त्र, विष्णु नारायण भातखंडे, संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तरप्रदेश
2.भारतीय संगीत का सौंदर्य विधान, मधुलता भटनागर, हिंदी माध्यम कार्यान्व निदेशालय, दिल्ली 199
3.संगीतांजलि, ओंकारनाथ ठाकुर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
4.संगीत बोध, शरतचंद्र श्रीधर परंजपें, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 1972
5.संगीत मकरंद, लक्ष्मी नारायण गर्ग, संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तरप्रदेश 1978
6.संगीत पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन, विष्णु नारायण भातखंडे, अनुवादक- भगवत शरण शर्मा, संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश
7.साहित्य दर्पण, विश्वनाथ लखनऊ, संस्करण 2, (विमला टीका रहित) एवं चतुर्थ संस्करण 1961
8.संगीत के प्रमुख शास्त्रीय सिद्धांत, सुभाष रानी चौधरी, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली
9.संगीत रूप भाग-2, देविंदर कौर, पर्ल बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, पटियाला
10.दसरूपक, धनंजय, निर्णय सागर, बम्बई, 10 वीं शताब्दी
11.राग परिचय भाग-4, हरिश्चंद्र श्रीवास्तव, इलाहाबाद 1968
12.पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति, स्वतंत्र शर्मा, प्रतिभा प्रकाशन, तृतीय, संस्करण, शक्ति नगर, दिल्ली 1996
13.हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पति एवं विकास, सुनंदा पाठक, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1989
14.नाट्यशास्त्र, आचार्य भरत, बाबु लाल शुक्ल शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी 1972
15.नाट्यशास्त्र, आचार्य भरत, रविशंकर नागर, खण्ड परिकमल पब्लिकेशन, दिल्ली 1982